

# The science of quarantine and the social life of COVID-19

A summary of Aphaluck Bhatiasevi's presentation at the SARS-CoV-2/COVID-19 workshop.

The narratives around the COVID-19 pandemic are broad and varied, including healthcare, political, economic and social perspectives. These narratives have been fluid, changing rapidly as the situation has evolved. For example, when the communist Chinese government implemented strict lockdowns, first in Wuhan (a city of 11 million people) and then in wider regions, the action was met with scepticism by many outside of China. As the outbreak spread in other countries, however, similar lockdowns have now been implemented outside of China, in most liberal and republican countries.

We will all be experiencing the pandemic, and its various lockdowns and quarantines differently in different parts of the world. On a macro level, our experiences will depend on our relationship with our government, our access to healthcare, and our access to basic daily needs, such as food and water.

On a micro level, our experiences will depend on our relationship with our families and friends, and on our living situation. In some households, relationships might be positively affected by lockdowns, whilst in others they might be negatively affected. The fear of the unknown, and the uncertainty of the situation will influence our daily lives.

Lockdown or quarantine cannot be a long-term solution to an epidemic, given the economic and sociological implications. A study of 129 people who were quarantined for an average of 10 days during the 2003 SARS outbreak in Canada showed that 28.9% later experienced symptoms of posttraumatic stress disorder, whilst 31.2% experienced symptoms of depression [1]. In addition, there is historical precedent of minority populations being more negatively affected by quarantines. Periods of quarantine should therefore be as short as possible.

Lockdown or quarantine is not the solution, it just buys us time to prepare to deal with the pandemic. It is never too late to consider the wider sociological effects of lockdowns and quarantines, both positive and negative, in different localities and social groups experiencing them.

संगरोध का विज्ञान और COVID -19 का सामाजिक जीवन  
SARS-CoV-2 / COVID-19 कार्यशाला में अपहलका भटसवी की प्रस्तुति का  
सारांश।

COVID-19 महामारी के आसपास की कथाएँ व्यापक और विविध हैं, जिनमें स्वास्थ्य सेवा, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण शामिल हैं। ये कथानक तरल हो चुके हैं, स्थिति के विकसित होते ही तेजी से बदल रहे हैं। उदाहरण के लिए, जब कम्युनिस्ट चीनी सरकार ने सख्त लॉकडाउन लागू किया, तो पहले वुहान (11 मिलियन लोगों का शहर) और फिर व्यापक क्षेत्रों में, चीन द्वारा की गयी कार्यवाही को बाहर के लोगों ने सन्देह की दृष्टि से देखा। जैसे-जैसे अन्य देशों में इसका प्रकोप फैलता गया, वैसे ही अब चीन के बाहर भी ज्यादातर उदार और गणतांत्रिक देशों में इसी तरह के तालेबंदी लागू कर दी गई है।

हम सभी महामारी का सामना करेंगे, और इसके विभिन्न लॉकडाउन और संगरोध को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग तरीके से अनुभव करेंगे। वृहद स्तर पर, हमारे अनुभव, हमारी सरकार के साथ हमारे संबंधों, स्वास्थ्य सेवा की हमारी पहुंच और भोजन और पानी जैसी बुनियादी दैनिक आवश्यकताओं तक हमारी पहुंच पर निर्भर करेंगे।

सूक्ष्म स्तर पर, हमारे अनुभव, हमारे परिवारों और दोस्तों के साथ हमारे संबंधों पर और हमारे रहने की स्थिति पर निर्भर करेंगे। कुछ घरों में, रिश्ते लॉकडाउन से सकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकते हैं, जबकि अन्य में वे नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकते हैं। अज्ञात का डर, और स्थिति की अनिश्चितता हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित करेगी।

लॉकडाउन या संगरोध एक महामारी का दीर्घकालिक समाधान नहीं हो सकता है, क्योंकि उसके आर्थिक और समाजशास्त्रीय निहितार्थ होते हैं। कनाडा में

2003 एसएआरएस के प्रकोप के दौरान 129 लोगों का औसतन 10 दिनों के लिए अध्ययन किया गया था, जिसमें पता चला कि 28.9% को बाद में पोस्टट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर के लक्षणों का अनुभव हुआ, जबकि 31.2% को अवसाद के लक्षणों का अनुभव हुआ। [1] इसके अलावा, यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि अल्पसंख्यक आबादी संगरोध से अधिक नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। इसलिए संगरोध की अवधि यथासंभव कम से कम होनी चाहिए।

लॉकडाउन या संगरोध समाधान नहीं है, यह सिर्फ महामारी से निपटने के लिए तैयार होने के लिए हमें समय खरीदता है। लॉकडाउन और संगरोध के व्यापक समाजशास्त्रीय प्रभावों, दोनों सकारात्मक और नकारात्मक, जो विभिन्न इलाके और सामाजिक समूह अनुभव करते हैं, उनपर विचार करने में कभी देर नहीं होती है।